Date 9/7/20.

B.A. Part I

Paper – I

Lecture – 39

Dr. Sunita Kumari

Assistant Professor

Marwari College Darbhanga

TOPIC – समाजीकरण के चरण

दोनों के अन्तर्गत उसको पूर्ण मन से स्वीकार नहीं किया जाता।
सामान्य रूप से यह माना जाता रहा है कि किशोरावस्था में लड़के लड़कियों के शारीरिक परिवर्तन के कारण विभिन्न प्रकार के तनाव होते हैं।
ये चार समायोजन के मुख्य सोपान हैं। इन सोपानों के पश्चात भी अन्य तीन stages होती हैं जो निम्नलिखित हैं —

1. युवावस्था → युवावस्था 20 साल से 35 साल तक की मानी गयी है। यह आयु उसके जीवन में सर्वाधिक उत्तरदायित्व का होता है। इस अवस्था में युवक की शादी हो जाती है तथा वह पारिवारिक जीवन प्रारम्भ कर देता है। वह कुछ धंधा या नौकरी भी जीविकोपार्जन के लिए शुरू कर देता है। इस अवस्था में व्यक्ति के सामने अनेकों समस्याएं आती हैं जिनके साथ उन्हें समायोजन करना होता है। इस तरह के समायोजन करने में वह बहुत से नए व्यवहारों को

सीखता है।

2. प्रौढ़ अवस्था – इस अवस्था में व्यक्ति और अधिक उत्तरदायित्व ग्रहण कर लेता है। उसके बच्चे बड़े हो जाते हैं तथा उनकी उच्च शिक्षा की व्यवस्था करनी होती है ऐसे व्यक्तियों में दूसरे का मार्गदर्शन करने की प्रेरणा अधिक होती है परिवार में उन्हें अपने बहु-बेटियों, पोती-पोतो के साथ समायोजन भी करना होता है। ~~फलस्वरूप~~ फलस्वरूप वह अपने व्यवहार में परिवर्तन कर कुछ नया व्यवहार सीखते हैं। जिससे उनका समाजीकरण होता है।

3. वृद्धावस्था – यह अवस्था 55 साल के बाद की होती है इस आयु में भी समाजीकरण की प्रक्रिया चलती रहती है वृद्धावस्था में मनुष्य में शारीरिक सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आ जाते हैं। शरीर में झुर्रियां पड़ जाती हैं, दुर्बलता आ जाती है, काम करने का पहले वाला सामर्थ्य नहीं रहता और व्यक्ति सामान्यतः अवकाशकालीन जीवन व्यतीत करता है।

इस तरह हम देखते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र विशेष तक सीमित नहीं रहती बल्कि जीवन भर चलती है। नयी-नयी परिस्थितियां नए प्रकार के समाजीकरण के लिए द्वार खोलता है।

Sumita Kumari